INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 12 | JANUARY – 2026

कोल जनजाति की सांस्कृतिक परंपराएँ और लोकजीवन का अध्ययन

रामपति रावत
शोधार्थी इतिहास
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. श्रीमती पुष्पा दुबे
सहायक प्राध्यापक इतिहास
राजभानु सिंह स्मारक महाविद्यालय, मनिकवार, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

प्रस्तुत अध्ययन मध्य भारत की प्रमुख आदिवासी समुदाय कोल जनजाति की सांस्कृतिक परंपराओं, सामाजिक संरचना तथा लोकजीवन के विविध आयामों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। कोल जनजाति की सांस्कृतिक पहचान उनकी प्राचीन जीवन–पद्धति, प्रकृति–केन्द्रित दृष्टिकोण तथा सामूहिक सामाजिक चेतना में निहित है। यह जनजाति मुख्यतः कृषि, वनोपज संग्रह, शिकार तथा श्रम आधारित आजीविका पर निर्भर रही है, जिसके कारण उनका जीवन प्रकृति के साथ सहजीवी संबंध में विकसित हुआ है। अध्ययन में कोल जनजाति की रीति–रिवाजों, धार्मिक विश्वासों, पर्व–त्योहारों, लोकनृत्य, लोकगीत तथा पारंपरिक कलाओं का विश्लेषण किया गया है। कोल समाज में पूजा–पद्धतियाँ मुख्यतः प्रकृति देवताओं, पूर्वजों की आत्माओं तथा ग्राम–देवताओं से जुड़ी हुई हैं, जो उनके आध्यात्मिक जीवन को दिशा प्रदान करती हैं। विवाह, जन्म और मृत्यु से संबंधित संस्कारों में सामूहिक सहभागिता और परंपरागत नियमों का विशेष महत्व है, जो सामाजिक अनुशासन और सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखते हैं। लोकजीवन के संदर्भ में कोल जनजाति का सामाजिक संगठन समानता, पारस्परिक सहयोग और सामुदायिक उत्तरदायित्व के सिद्धांतों पर आधारित है। पंचायत, मुखिया तथा परंपरागत परिषद जैसे संस्थान सामाजिक नियंत्रण और विवाद निपटारे में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लोकगीत और लोककथाएँ कोल समाज के ऐतिहासिक अनुभवों, संघर्षों तथा सामूहिक स्मृति को अभिव्यक्त करती हैं। अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि औपनिवेशिक काल तथा उत्तर–औपनिवेशिक विकास प्रक्रियाओं ने कोल जनजाति की सांस्कृतिक संरचना और लोकजीवन को प्रभावित किया है। शिक्षा, नगरीकरण और बाजार–आधारित अर्थव्यवस्था के प्रभाव से परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन की प्रवृत्ति दिखाई देती है। तथापि, कोल जनजाति ने अपनी सांस्कृतिक अस्मिता और लोकपरंपराओं को संरक्षित रखने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। यह अध्ययन कोल जनजाति की सांस्कृतिक परंपराओं और लोकजीवन को भारतीय आदिवासी संस्कृति के व्यापक परिप्रेक्ष्य में स्थापित करता है तथा यह प्रतिपादित करता है कि कोल जनजाति की सांस्कृतिक विरासत न केवल ऐतिहासिक महत्व रखती है, बल्कि समकालीन सामाजिक–सांस्कृतिक विमर्श में भी अत्यंत प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द – कोल जनजाति, सांस्कृतिक परंपराएँ, लोकजीवन।

प्रस्तावना –

भारत विविधताओं का देश है, जहाँ अनेक जनजातियाँ अपनी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान के साथ सहस्राब्दियों से निवास करती आ रही हैं। भारतीय समाज की सांस्कृतिक बहुलता में जनजातीय समुदायों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन्हीं समुदायों में मध्य भारत की एक प्राचीन एवं विशिष्ट जनजाति कोल जनजाति का स्थान उल्लेखनीय है। कोल जनजाति मुख्यतः मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ तथा झारखंड के सीमावर्ती क्षेत्रों में निवास करती है और अपनी अलग सांस्कृतिक परंपराओं, लोकविश्वासों एवं जीवन–शैली के कारण एक सुदृढ़ पहचान रखती है।

कोल जनजाति का सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन प्रकृति–केन्द्रित दृष्टिकोण पर आधारित है। उनके दैनिक जीवन में वन, भूमि, नदी, पर्वत तथा प्राकृतिक शक्तियों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। उनकी आजीविका, धार्मिक विश्वास, पर्व–त्योहार, लोकगीत, लोकनृत्य और परंपरागत कला रूप प्रकृति और समुदाय के सामूहिक अनुभवों से विकसित हुए हैं। कोल समाज की सांस्कृतिक परंपराएँ न केवल उनकी जीवन–व्यवस्था को नियंत्रित करती हैं, बल्कि पीढ़ी–दर–पीढ़ी सामाजिक मूल्यों और नैतिक मान्यताओं के संरक्षण का माध्यम भी बनती हैं।

औपनिवेशिक शासन, वन नीतियों, भूमि व्यवस्थाओं तथा आधुनिक विकास प्रक्रियाओं ने कोल जनजाति के पारंपरिक जीवन और सांस्कृतिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। शिक्षा, नगरीकरण, बाजारवाद और बाह्य सांस्कृतिक प्रभावों के कारण उनके लोकजीवन में परिवर्तन की प्रक्रिया तीव्र हुई है। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में कोल जनजाति की सांस्कृतिक परंपराओं और लोकजीवन का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, ताकि उनकी सांस्कृतिक अस्मिता, सामाजिक संगठन और पारंपरिक ज्ञान–प्रणालियों को समझा जा सके।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कोल जनजाति की सांस्कृतिक परंपराओं और लोकजीवन का समग्र एवं वैज्ञानिक विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत उनकी सामाजिक संरचना, धार्मिक विश्वास, रीति–रिवाज, लोकसाहित्य तथा समकालीन परिवर्तनों के प्रभावों का अध्ययन किया गया है। यह शोध न केवल जनजातीय अध्ययन के क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होगा, बल्कि नीति–निर्माण, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक विकास की दिशा में भी सार्थक योगदान प्रदान करेगा।

विश्लेषण –

कोल जनजाति की सांस्कृतिक परंपराएँ उनके ऐतिहासिक अनुभवों, पर्यावरणीय परिस्थितियों तथा सामाजिक संरचना के अंतःसंबंधों से निर्मित हुई हैं। यह जनजाति मध्य भारत के वनाच्छादित एवं पठारी क्षेत्रों में निवास करती रही है, जहाँ प्रकृति केवल जीवन–निर्वाह का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना का मूल आधार भी रही है। कोल समाज का लोकजीवन कृषि, वनोपज संग्रह और श्रम आधारित आजीविका पर केंद्रित रहा है, जिसके परिणामस्वरूप सामूहिकता, सहयोग और समानता जैसे मूल्य विकसित हुए हैं।[1]

कोल जनजाति की धार्मिक–सांस्कृतिक परंपराएँ मुख्यतः प्रकृति–पूजन और पूर्वज–आराधना से जुड़ी हुई हैं। सूर्य, पृथ्वी, वन–देवता, ग्राम–देवता तथा कुल–देवता उनके धार्मिक विश्वासों के केंद्र में हैं। ये विश्वास केवल आध्यात्मिक आस्था तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक अनुशासन और नैतिक आचार–संहिता को भी नियंत्रित करते हैं। वेरियर एल्विन के अनुसार जनजातीय समाजों में धर्म और दैनिक जीवन के बीच कोई स्पष्ट विभाजन नहीं होता, बल्कि दोनों एक–दूसरे में अंतर्निहित रहते हैं।[2] कोल समाज में यह तथ्य विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है, जहाँ पर्व–त्योहार कृषि–चक्र और प्राकृतिक परिवर्तनों से सीधे जुड़े होते हैं।

लोकजीवन के सांस्कृतिक पक्ष में लोकगीत, लोकनृत्य और लोककथाएँ कोल जनजाति की सामूहिक स्मृति और ऐतिहासिक चेतना को अभिव्यक्त करती हैं। इनके लोकगीतों में श्रम, प्रेम, प्रकृति और संघर्ष के अनुभव निहित हैं। विवाह, जन्म और मृत्यु से जुड़े संस्कारों में लोकगीतों और नृत्यों की अनिवार्य भूमिका सामाजिक एकता को सुदृढ़ करती है। के.एस. सिंह का मत है कि जनजातीय लोकसंस्कृति केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक शिक्षा और सांस्कृतिक निरंतरता का प्रभावी माध्यम है।[3]

कोल जनजाति की सामाजिक संरचना अपेक्षाकृत सरल और समानतामूलक रही है। पंचायत, मुखिया और परंपरागत परिषद जैसे संस्थान सामाजिक नियंत्रण, विवाद निपटान और सामुदायिक निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह व्यवस्था औपचारिक कानून से अधिक नैतिकता और परंपरा पर आधारित होती है।

औपनिवेशिक काल में वन कानूनों और भू–राजस्व नीतियों ने कोल जनजाति की इस परंपरागत व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया, जिससे उनके आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में असंतुलन उत्पन्न हुआ।[4]

समकालीन परिप्रेक्ष्य में शिक्षा, नगरीकरण और बाजार–आधारित अर्थव्यवस्था के प्रभाव से कोल जनजाति के लोकजीवन में परिवर्तन की प्रक्रिया तीव्र हुई है। पारंपरिक ज्ञान, लोककला और सामुदायिक मूल्यों पर बाह्य सांस्कृतिक प्रभाव स्पष्ट दिखाई देते हैं। तथापि, यह भी सत्य है कि कोल जनजाति अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को संरक्षित रखने के लिए लोकपर्वों, पारंपरिक अनुष्ठानों और सामूहिक आयोजनों के माध्यम से निरंतर प्रयासरत है। यह द्वंद्व परंपरा और आधुनिकता के बीच–उनके समकालीन लोकजीवन की प्रमुख विशेषता बन गया है।

इस प्रकार, कोल जनजाति की सांस्कृतिक परंपराओं और लोकजीवन का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि उनकी संस्कृति स्थिर न होकर गतिशील है, जो ऐतिहासिक परिस्थितियों और सामाजिक परिवर्तनों के साथ स्वयं को अनुकूलित करती रही है। यह अध्ययन भारतीय जनजातीय समाज की सांस्कृतिक बहुलता और उसकी जीवंत परंपरा को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कोल जनजाति की सांस्कृतिक परंपराएँ और लोकजीवन भारतीय जनजातीय समाज की समृद्ध, जीवंत और निरंतर विकसित होती सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग हैं। कोल समाज की सांस्कृतिक पहचान उनकी प्रकृति–केन्द्रित जीवन–दृष्टि, सामुदायिक चेतना तथा परंपरागत सामाजिक मूल्यों में निहित है, जो उन्हें मुख्यधारा समाज से विशिष्ट बनाती है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कोल जनजाति के धार्मिक विश्वास, रीति–रिवाज, पर्व–त्योहार, लोकगीत और लोकनृत्य केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक संगठन, नैतिक अनुशासन और सामूहिक जीवन–प्रणाली के सशक्त माध्यम भी हैं। इनके माध्यम से पीढ़ी–दर–पीढ़ी सांस्कृतिक ज्ञान का संप्रेषण होता रहा है, जिससे सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है। यह भी निष्कर्षित किया जा सकता है कि औपनिवेशिक शासनकाल की नीतियों तथा उत्तर–औपनिवेशिक विकास प्रक्रियाओं ने कोल जनजाति के पारंपरिक लोकजीवन को गहराई से प्रभावित किया है। शिक्षा, नगरीकरण, वन कानूनों और बाजारवादी अर्थव्यवस्था के प्रभाव से कोल समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया तीव्र हुई है, जिसके परिणामस्वरूप परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों में आंशिक क्षरण दिखाई देता है। तथापि, इन परिवर्तनों के बावजूद कोल जनजाति ने अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को पूर्णतः त्यागा नहीं है। अध्ययन यह भी प्रतिपादित करता है कि कोल जनजाति की संस्कृति स्थिर न होकर गतिशील है, जो समय और परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को पुनर्संरचित करती रही है। लोकपर्वों, पारंपरिक अनुष्ठानों, सामाजिक संस्थाओं और सामूहिक आयोजनों के माध्यम से कोल समाज आज भी अपनी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखने का प्रयास कर रहा है। इस प्रकार कोल जनजाति की सांस्कृतिक परंपराओं और लोकजीवन का संरक्षण न केवल सांस्कृतिक विविधता की दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि सामाजिक न्याय, समावेशी विकास और जनजातीय अस्मिता के सुदृढ़ीकरण की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन नीति–निर्माताओं, समाजशास्त्रियों तथा जनजातीय अध्ययन के क्षेत्र में कार्यरत शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी संदर्भ प्रदान करता है और भविष्य में कोल जनजाति पर होने वाले अनुसंधानों के लिए एक ठोस आधार निर्मित करता है।

संदर्भ –

[1] के.एस. सिंह – भारत में जनजातीय समाज, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ 45–47।

[2] वेरियर एल्विन – मध्य भारत की जनजातीय दुनिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1964, पृष्ठ 112–118।

[3] के.एस. सिंह – भारत में जनजातीय आंदोलन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ 76–80।

[4] डी.एन. मजूमदार – भारत की जातियाँ और संस्कृतियाँ, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे, 1951, पृष्ठ 210–215